भूमिका

देश में बढ़ते कृषि संकट को ग्रामीण मजदूरों और किसानों के आक्रोश और प्रतिवाद ने फिर राजनीतिक अजेंडा बना दिया है| औपचारिक काल सें लेकर आज तक भारत में जो भि राजनीतिक नीति में उत्पादन बढ़ाने, मजदूरी, ग्रामीण मजदूरो को कृषि एवं कृषित्तर क्षेत्र में सहायक रोजगार देने, कृषि तथा गैर कृषि क्षेत्रों मे संपर्क जोड़ने एवं कृषि वस्तुओं के उत्पादन व व्यापार का कृषि विकास संगठित करने पर ज़ोर दिया गया है| भारत में कृषि क्षेत्र की प्रगति की समीक्षा करने पर पत्ता चलता है, कृषि विकास की योजनाओं का क्रियान्व्न ठीक तरह से नहीं हो रहा है| कृषि विकास मे अस्थिरता आती रही है| कृषि नीतिया बनाई गई, वे सभी अतत: और बड़े कृषि संकट के दुष्चक्र में फस कर हर बार गावों में मजदूर किसानो का आंदोलनो का उभार समय – समय पर विद्रोह दिखाई दिया और सरकारों को नए – नए कानून बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा|

जैसे – जैसे किसान की कठिनाईया बढ़ती है, वैसे- वैसे उसके सिर का बोज भी बढ़ता जाता है और कर्ज बढ़ाने से उसकी कठिनाईया और भी बढ़ जाती है| यह चक्र तब तक चलता रहता है, जब तक की किसान जमीन से हाथ नहीं धो बैठता , इस प्रकार एक तरफ कर्ज बढ़ता है, तो दूसरी तरफखेती बिकने का संकट मँडराता है|

किसान अगर दो लाख की फसल पैदा करता है, और कर्जा उस पर तीन लाख का है, तो पूरे साल मे जो उसने कमाया तो वो बैक और साहूकारों के पास चला गया, ऐसी स्थिति में किसान आत्महत्या नहीं करेगा तो क्या करेगा| इस देश का किसान, अन्नदाता क्यो आज मरने

को मजबूर है| इसके लिए सरकार को कुछ एसे कदम उठाने चाहिए जिस से किसान खुशहाल हो| आत्महत्या करने का एसा सिलसिला चलता रहा तो एक दिन भारत को अमेरिका से अनाज आयात करना पड़ेगा| इसलिए समय – समय पर देश को सरकार को किसान के साथ खड़ा होना पड़ेगा और उसकी आर्थिक दशा को सुदरना पड़ेगा|

आत्महत्याओं का समाज पर विपरीत परिणाम हो रहा है | किसान की आत्महत्याओं के कारणों की खोज करनेवाले बहुत सी योजनाए एवं कार्यक्रम गुजरे कई साल में प्रसिद्ध हुए| बहुत सी सरकारी योजनाए एवं कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए| इससे परिस्थिती में क्या सुधार हुआ? यह एक शोध विषय हो सकता है| यह प्रश्न सभी बुद्धिजीवी समाज में चर्चा में आया, इस प्रश्न को लेकर काफी बहस हुई, इस वजह से सरकार को गंभीरता से सोचना पड़ा और आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार पुनर्वसन के बारे में अपना लक्ष केन्द्रित करना पड़ा| किसान आत्महत्या के बाद इस सामाजिक प्रश्न की गांभीर्यता समज आयी| मौसम साथ नहीं देता और सरकार कृषि माल को भाव नहीं देते, इससे किसान कर्ज के चक्रव्यूह में ऐसा फसा जो हमेशा के लिए|

प्रस्तावना

किसान हमारे अन्नदाता है| उनकी आत्महत्या पूरे राष्ट्र के लिए शर्म की बात है| देश की केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारों को किसानों की आत्महत्या रोकने की लिए युद्धस्तर पर प्रयत्न करने की आवशक्ता है| भारत जैसे कृषीप्रधान देश मे यदि किसानों की एसी अवस्था हो तो हमारी प्रगति और विकास की सारी बातें , सारी उपलब्धिया अर्थहीन है| देश के अर्थशास्त्री , देश की सरकार को, सबसे पहले इसी पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए | दस हजार से अधिक किसानों के द्वारा आत्महत्या की रपटे दर्ज की गई है |

किसान की आत्महत्या के बाद पूरा परिवार उसके असर में आ जाता है| बच्चे स्कूल छोड़कर खेतीबाड़ी के कामों मे हाथ बटाने लगते है| परिवार को कर्ज की विरासत मिलती है, और इस बात की आशंका बढ़ जाती है की बढ़े हुए पारिवारिक दबाव के बीच परिवार के कूछ अन्य सदस्य कहीं अत्महत्या ना कर बैठे| भारत में किसान अत्महत्या 1990 के बाद पैदा हुई स्थिति है, जिसमें प्रतिवर्ष दस हजार से अधिक किसानो के द्वारा आत्महत्या की रपटें दर्ज की गई है| 1997 से 2006 के बीच 1,66,304 किसानों ने अत्महत्या की| भारतीय कृषि बहुत हद तक मानसून पर निर्भर है| तथा मानसून की असफलता के कारण नकदी फसले नष्ट होना किसानों द्वारा की गई आत्महत्याओ का मुख्य कारण माना जाता है |मानसून की विफलता, सूखा, कीमतों में वृद्धि, ऋण का अत्यधिक बोज आदि परिस्थितिया समस्याओं के एक चक्र की शुरुवात करती है| बैकों, महाजनो, बिचौलिओ आदि के चक्र में फसकर भारत के विभिन्न हिस्सों के किसानों ने आत्म्हत्याए की है| 1990 ई. मे प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार 'द हिन्दू' के ग्रामीण मामलों के संवाददाता पी. साईनाथ. ने कियानों द्वारा नियनित आत्महत्याओ की सूचना

दी| वर्तमान समय मे महाराष्ट्र सरकार ने केंद्र से किसानों के कर्ज माफी के लिए एक नई योजना शुरू की है, जिसका नाम है 'छत्रपती शिवाजी महाराज शेतकरी सम्मान योजना 2017' देश की सबसे बड़ी 34 हजार करोड़ की कर्जमाफी का निर्णय महाराष्ट्र सरकार ने लिया है| इसके पहले पंजाब राज्य ने 10 हजार करोड़ की, आन्ध्रप्रदेश ने 15 हजार करोड़ की, कर्नाटक ने 8 हजार करोड़ रुपये की कर्जमाफी देशभर में सबसे अधिक है| महाराष्ट्र सरकार ने दीड लाख कर्ज माफ करने की घोषणा की है|

किसान आत्महत्याओ की रपटे आरंभ में महाराष्ट्र से आयी | जल्दी ही आन्ध्रप्रदेश से भी आत्महत्याओ की खबरे आने लगी| शुरुवात मे लगा की अधिकांश आत्महत्याए महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के कपास उत्पादक किसानों ने की है| लेखीन महाराष्ट्र के राज्य अपराध लेखा कार्यालय से प्राप्त आकड़ों कों देखने से स्पष्ट हो गया की, पूरे महाराष्ट्र में कपास सहित अन्य नगदी फसलों के किसानों की आत्महत्याओ की दर बहुत अधिक रही है| आत्महत्या करनेवाले केवल छोटी जोतवाले किसान नहीं थे बल्कि मध्यम और बड़े जोतवाले किसान भी थे|राज्यसरकार ने इस समस्या पर विचार करने दे लिए कई जाँच समितीय बनाई है| भारत देश कृषिप्रधान है, देश की 60 फीसदी जनसंख्या कृषि पर निर्भर है| राष्ट्रीय उत्पादन मे कृषि का महत्वपूर्ण योगदान होता है| जब देश का किसान आर्थिक संपन्न होगा तभी देश के कृषि क्षेत्र मे समृद्धि आ सकती है| किसान आत्महत्या तो करता है,लेकिन उसकी पत्नी,बच्चे और बूढ़े माँ-बाप जीते जी ही मर जाते है| उनको खाने के लिए रोटी,पहनने के लिए कपड़ा, रहने के लिए मकान, अच्छा स्वास्थ और शिक्षा यह मूलभूत आवश्यकता पूरी नहीं हो पा पातीतो हमारा देश आर्थिक महासत्ता कैसे हो सकता है| इसीलिए किसान आत्महत्या करने के पश्चात उनके परिवार का पुनर्वसन नहीं होना यही, प्रस्तुत लघु शोध की समस्या है|

***शोध प्रविधि** - प्रस्तावित शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया जाएगा|

शोध उद्देश -

1)आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना|

2) आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार को दिया गया सरकारी आर्थिक लाभ का अध्ययन करना|

3) गैरसरकारी संगठन की आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार पुनर्वसन में स्वयंसहायता समूह की भूमिका का अध्ययन करना|

4) आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार पुनर्वसन मे 'स्वयं' प्रयास का अध्ययन करना

5) किसान की मूलभूत समस्याओं का अध्ययन करना|

शोध की परिकल्पना -

1) आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार को सरकारी आर्थिक लाभ मिलता है|

2) गैरसकरी संगठन की आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार को सहायता मिलती है|

3) आर्थिक सक्षमता में किसान परिवार को स्वयं-सहायता समूह का योगदान होता है|

4) आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार के मूलभूत समस्या का अध्ययन किया जाता है|

उपयोगिता एवं महत्व –

प्रस्तावित लघुशोध विषय कि उपयोगीता एवं महत्व यह है की, आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार पुनर्वसन में आनेवाली समस्या एवं उपायो का विस्तार से अध्ययन करना| यह शोध सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्रदान करेगा|

शोध सामग्री का संकलन –

प्रस्तावित लघु शोध कार्य के लिए सामग्री संकलन मुख्यत: प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची अवलोकन से किया है| इसके व्यतिरिक्त पत्रिका, दैनिक समाचार ,इन्टरनेट विधि का उपयोग किया गया है|

लघु शोध की कार्य योजना –

प्रस्तावित लघु शोध की केंद्रीय समस्या आत्महत्याग्रस्त किसान परिवारों का पूनर्वसन के संदर्भ में है| तथा उनके आर्थिक उत्थान एवं सकारात्मक सोच में सरकारी, गैरसरकारी संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका का अध्ययन और विश्लेषण है|

लघुशोध विषय की सीमा –

प्रस्तावित लघुशोध कार्य के अंतर्गत निम्नांकित बिन्दुओं का अध्ययन अपेक्षित है|

1) आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार के बार में ज्ञान प्राप्त करना|

2) किसान की मूलभूत समस्या का अध्ययन करना|

3) आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार पूनर्वसन में सरकारी एवं गैरसरकारी संगठन का योगदान क्या है|

4) आत्महत्याग्रस्त किसान परिवार के स्वयंप्रयास का अध्ययन करना|

प्रथम अध्याय : किसान आत्महत्या की पृष्ठभूमि

त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है किसान| वह जीवनभर मिट्टी से सोना उत्पन्न करने की तपस्या करता रहता है| तपती धूप, कड़ाके की ठंड तथा मूसलाधार बारिश भी उसकी साधना को तोड़ नहीं पाते| हमारे देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी आज भी गावों मे निवास करती है| जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है| भारतीय किसान से ही भारतीय संकृति और सभ्यता को सहज कर रखे हुए है| किसान की शक्ति और भक्ति कृषि ही है|

वर्तमान समय में किसान ही विकास का केन्द्रबिन्दु होना चाहिए| किसान हमें खाद्यान्न देने के अलावा राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ाने और भारतीय संस्कृति की पहचान देता है| वह देशभर को अन्न, फल, सब्जी,साग आदि दे रहा है|लेखिन किसान को इसके बदले में उसे उसका परिश्रमिक तक नहीं मिल पा रहा है| प्राचीन काल से लेकर आज तक किसान का जीवन अभाओं में ही गुजरा है| किसान मेहनती होने के साथ – साथ सदा जीवन व्यतीत करनेवाला होता है| समय अभाव के कारण उनकी आवशकताए भी बहुत सीमित हैं| उनकी सबसे बड़ी आवश्यकता पानि है| यदि समय पर वर्षा नहीं होती है तो किसान उदास हो जाता है| एंकी दिनचर्या रोजाना एक सी ही होती है| वह प्रात: तड़के उठता है और अपने हल एवं बैल लेकर खेतों की और चला जाता है| वह घंटो खेत जोतता है, तत्पश्चात नाश्ता करता है| उसके घर परिवार के सदस्य उसके लिए खेत मे खाना खाते है| उनका खाना बहुत ही साधारण होता है| ईसमे अधिकतर चपाती, आचार, दाल होती है| किन्तु कठिन परिश्रम के पश्चात भी उसे बहुत कम लाभ मिलता है| वह अपनी उपज को बाजार मे बहुत कम दामो पर बेचता है| किसान ही धरती माता का सच्चा सपूत है| वह ऋषि-मुनियो, संत महात्माओ के जीवन के उच्चादर्शो के

काफी निकट है,क्योकि कह भीषण गर्मी मे गंभीर आघातो को सहकर, कड़ाके की ठण्ड मे और बरसते हुए पानि ने रहकर अपने कर्म मे गम्भीर आघातो को सहकर, अपने कर्म में बड़ी ही ईमानदारी एवं तत्परता से लगा रहता है|

धरती के समूचे प्राणियों के जीवन के लिए अन्न उपजानेवाला किसान इतना परोपकारी एवं मेहनती है, की वह अपने स्वार्थ व सूख की तनिक भी चिंता नहीं करत| उनका जीवन अत्यंत सीधा साधा है| शरीर पर धोती,अंगरखा, गमछा,और नंगे पैर रहकर भी दूसरों के लिए अन्न उपजाना ही उसका ध्येय है| प्रत:काल सूरज उगाने के साठा सायंकाल सूरज केडूबने की साधना है| घर आर अपने पशुओ की सेवा करने मे भी वह जरा सी भी सुस्ती नही करत|

ऋणग्रस्तता ने उन्हे गरीबी के मूह मे धकेल दिया है| जमींदारो के कर्ज के बोज तले दबा हुआ उसका जीवन कभी अकाल, तो कभी महगाई तो कभी बाढ़ या सूखे की चपेट मे आ कर बैठता है| कई बार तो उन्हे सपरिवार समूहिक रूप मे भीषण गरीबी सी जूझते हुए आत्महत्या भी करनी पड़ती है| कर्ज के बोझ तले दबा हुआ उसका जीवन बँधुआ मजदूर के जीवन से कुछ कम नहीं होता| सच कहा जाए, तो वह कर्ज मे ही पैदा होता है, कर्ज मे ही जीता है और कर्ज मे ही मर जाता है| उसके बैलो की प्यारी जोड़ी भी उसके हल साथ बिक जाती है| अथक परिश्रम से तैयार की गई फसल खलिहान तक पहुचने से पहले साहूकार,जमींदार के हाथो मे पहुच जाती है| उसकी इस आर्थिक अभावग्रस्त पीड़ा की व्यथा कथा को वही समझ सकता है|

ज़्यादातर किसानो को पढ़ने लिखने का समय भी कम मिलता है, जिसके कारण से अधिक नहीं पढ़ पाते है| कम पढे होने की वजह से बहुत सारे लोग उन्हे ठगते है| हम सभी लोगों को चाहिए की किसानो की मदत कर और उन्हे शिक्षित करने का प्रयास कर ,हम सभी लोगो को किसानो को सम्मान देना चाहिए और जहा तक हो सके उनकी सहायता करनी चाहिए| अशिक्षा, अंधविश्वास, तथा समाज मे व्याप्त कुरीतिया उसके साथी है|सरकारी कर्मचारी, बड़े

जमींदार, बिचौलिया तथा व्यापारी उसके दुश्मन है, जो जीवनभर उसका शोषण कराते रहते है| रूढ़िवादिता और परंपरावादी होना भारतीय किसान के स्वभाव की मूल विशेषत: है|

उदारीकरण और वैश्विकरन की वजह से हमारे देश मे सस्ते खाद्यानों का आयात भी शुरू हो गया है और दूसरी तरफ देश के किसान लागत से भी कम मूल्य मिल पाने की वजह से खड़ी फसलो को खेत मे ही आग लगाने पर मजबूर हो रहे है| गरीबी, तंगहली, एव फसल उपजाने के उद्देश से लिए गए कर्ज और उसपर बढ़ रहे ब्याज की वजह से अंत मे वह परिवार समेत आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाता है|

* उपसंहार *

किसान आत्महत्या करता है, यह हम सब सुनते है, लेकिन किसी स्त्रि किसान ने आत्महत्या की है ऐसा सुनने में या पढ़ने में नहीं आता है| यह भी सच है की, ज़िम्मेदारी पुरुष किसान पर अधिक होती है, लेकिन शोधार्थी को शोध के समय यह ज्ञात हुआ की, स्त्रि पुरुष की अपेक्षा अधिक भावनिक और मानसिक कठोर और सहनशील होती है| इसीलिए संपूर्ण परिवार पर कर्ज होने या अन्य कोई संकट आने पर स्त्रि दृढ़ निश्चय के साथ ज़िंदगी के सफर में खड़ी रहती है| पिछले कुछ सालो में किसान आत्महत्या पर ज्यादा चर्चा, लेखन और विचार हो रहा है, इसका सकारात्मक परिणाम किसान की समाजिक, आर्थिक जीवनस्तर पर पड रहा है|

सामान्यत: किसान आत्महत्या करने का मुख्य कारण उसपर होनेवाला ऋण होता है, यह तो सत्य है| लेखिन किसान सबसे पहले अल्पशिक्षित ही नहीं अधिक किसान निरक्षर भी है| किसान में शिक्षा का अभाव होने के कारण उसको अघायावत तकनीकी ज्ञान और सरकरी योजनाओं की जानकारी नहीं होती है| इसलिए उनपर आनेवाले संकट से वह लढता नहीं है और ज्यादा मानसिक तनाव में आकर आत्महत्या का शिकार हो जाता है|

***इलेक्ट्रिक और प्रिंट मीडिया की भूमिका:**

वर्धा जिले की अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में रहती है| किसान तो हर सुबह श्याम मेहनत का काम करके शारीरिक और मानसिक रूप से ऊब जाता है ऐसे में आज दूरदर्शन या रेडियो नहीं बल्कि प्रिंट मीडिया भी गाँव में प्रवेश कर चुका है| जो किसान

को मानसिक रंजन और सकारात्मक ज्ञान में सहायक है| किसान महिला घर में काम करते-करते कभि एम. गिरि. (एफ. एम. रेडियो, वर्धा) तो कभि यवतमाल रेडियो केंद्र सुनती है, इससे संपूर्ण परिवार के सदस्यों को सरकारी योजनाओं की, फसल बीज की, उर्वरक की, किडनाशक की सही जानकारी प्राप्त होती है| दूरदर्शन पर कृषि से संबंधित उपयुक्त एवं तकनीकी जानकारी प्राप्त होती है| इस ज्ञान से किसान के मन पर काफी सकारात्मक परिवर्तन हुआ है| इसलिए किसान आत्महत्या रोकने में और उनका पुनर्वसन होने में इलैक्ट्रिक और प्रिंट मेडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है|

***सरकारी योजनाओं का किसान पुनर्वसन में योगदान:**

'आत्महत्या' नामक शब्द सुनकर ही आदमी के मन पर हतबलता का नकारात्मकता दृष्टिकोण दिखाई देता है| किसान आत्महत्या करने के लिए पूर्णत: सरकार को दोष देना उचित नहीं होगा| किसान आत्महत्या तो स्वयं करता है क्योंकि वह कर्ज या अन्य संकट से लढ नहीं पाता है, सरकार तो किसान भाई को केवल संकट से निपटने के लिए सहारा देता है, लेखिन स्थिति तो ऐसी नहीं है, किसान आत्महत्या करने के पश्चात सभी ज़िम्मेदारी सरकार की है और स्वयं किसान की नहीं, ऐसा माहौल निर्माण किया जाता है, ऐसा नहीं है| किसान वहान योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, फसल बीमा योजना, सरकार द्वारा दिए गए अन्य अनुदान आदि योजनाओ से किसान के आर्थिक जीवन में काफी बदलाव आया है|

***पुनर्वसन में स्वयं सहायता समूह की भूमिका:**

ग्रामीण क्षेत्र के वर्तमान समय में आर्थिक क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह का योगदान महत्वपूर्ण है | संकट के समय किसान को स्वयं सहायता समूह का आधार लेना

पड़ता है | 86.66 प्रतिशत किसान की स्वयं सहायता समूह में सहभागिता दर्शाई गई है| इस से ज्ञात होता है की, किसान को आर्थिक संकट से निपटने के लिए स्वयं सहायता समूह का अधिक योगदान है| महाराष्ट्र राज्य ग्रामीण जीवन्नोन्नति अभियान वर्धा ने महाराष्ट्र के किसान को आर्थिक रूप से सबल और सशक्त बनाने के लिए काफी योगदान दिया है| इस अभियान का मुख्य उद्धेश गरीबी निर्मूलन है, इस अभियान ने ग्रामीण महिलाओं को रोजगार और जीने की सकारात्मक ऊर्जा प्रदान की है| शोध के समय यह ज्ञात हुआ की, जो गैर सरकारी संगठन है, उनकी ज्यादा जानकारी ग्रामीण किसान को नहीं है| सरकारी संगठन हो या गैर सरकारी संगठन हो और समाज का कोई भी हितचिंतक हो ह्र एक के मन में सामाजिक बांधिलकी का भाव अगर होता है तो किसान का पुनर्वसन ज्यादा दूर नहीं है|